खूबियों और चुनौतियों के बीच झूलता भारत

डॉ. एम. डी. थॉमस

भारत देश अपनी विविधताओं के लिए समचू ी दुनिया म एक खास जगह रखता है। वास्तव म भारत एक देश न होकर अनेक देशों का एक विशाल समह् है। भौगोलिक खूबसूरती की तरह-तरह की परिभाषाएं यहाँ मिलती हैं। जातियों, प्रजातियों और जनजातियों की बशुमार भिन्नताएं भी हैं। राष्ट्र-भाषा और अंतरराष्ट्रीय भाषा के साथ-साथ पंद्रह राष्ट्रीय स्तर पर अंगीकार-प्राप्त प्रादेशिक भाषाएं और हज़ारों जन-बोलियाँ भारत की खूबो है। दुनिया की सभी बड़ी-बड़ी मज़हबी परम्पराएं भारत म मौजूद हैं। भारत की बड़ी और छोटी विचारधाराओं के साथ-साथ विश्व की करीब सभी विचारधाराएं भारत म मौजूद हैं।

भारत की हिन्दुस्तानी और कर्नाटकीय संगीत-पद्धतियाँ बहुत ही अनुभवात्मक और मोक्षदायिनी हैं। शास्त्रीय नृत्य की सातों परम्पराएं और लोकनृत्य की सैकड़ों परम्पराएं 'एक से बढ़कर एक अच्छी' के तौर पर मनमोहक हैं। साहित्य की विविध विधाएं हों, वेश-भूषा के रंग-बिरंगे तौर-तरीके हों, खान-पान के बशुमार पकवान हों या सामाजिक रीति-रिवाज़ के भिन्न-भिन्न अन्दाज़ — ये सब भारतीय समाज की विविधताओं के अलग-अलग आयाम हैं। भारत की एक संस्कृति न होकर भारत म अनेक सँस्कृतियाँ साथ-साथ रहती-बढ़ती हैं। उपयुक्त सभी विविधताएं भारत देश की सामाजिक धरोहर हैं। इन विविधताओं को एक सूत्र म पिरोनेवाली चीज़ है एकता का भाव। भारत बशुमार मामलों म अनेक होकर भी एक है, एक होकर भी अनेक है। 'वसुधैवकुटुम्बकम्' का सारतत्व, बस एसी पारिवारिक भावना है। एसी अनोखी विशेषता वाले देश का नागरिक होने की खुशकिस्मती पाकर हम अपने आप पर नाज़ होना चाहिए।

राष्ट्र के रूप म भारत की इमारत भारत के संविधान की नींव पर खडो है। विश्व के समस्त संविधानों म भारत के संविधान की अपनी पहचान है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतन्त्र के लायक होना ही इस संविधान का अनूठापन है। पंथरिपक्षता इस संविधान की जान और शान है। यही दृष्टिकोण लोकतन्त्र की बनियाद भी है। इसके मताबिक भारत देश जितना रामभक्त का है, ठीक उतना ईसाभक्त का भी है। वह जितना जैन का है, ठीक उतना मसलमान और पारसी का भी है। भारत की सभी प्रजातियाँ और भाषाएं देश के लिए समान महत्व की हैं। नागरिक के रूप म ब्राह्मण और शूद, पढ़े-लिखे और अनपढ़ और अमोर और गरीब के समान हक और फर्ज़ हैं। कानून के सामने सब बराबर हैं। भारत देश किसी एक समदाय विशेष की बपौती नहीं है। लोकतन्त्र के मताबिक हर शख्स, वर्ग और समदाय की अपनो-अपनी जगह है। सब मिलकर भारत देश बनता है। भारत के संविधान के कारण भारत की सँस्कृति एक मिली-जुली सँस्कृति साबित होती है। इसलिए पंथनिरपक्षता के नज़रिये के मताबिक सोचना और बताव करना भारत के हर नागरिक का फ़र्ज बनता है।

लेकिन, भारत देश का धुआँदार पहलू इतना तेज़ है कि उससे रूबरू होकर कोइ भी नागरिक खौफ़ से भरे बिना नहीं रह सकता। कुछ लोग अभी भी अपने आपको ऊँची जाति के और दूसरों को नीची जाति के समझकर छुआछूत का भाव पालते हैं। कहीं दलितों के साथ अमानवीय व्यवहार हो रहा है, कहीं जनजातियों और आदिवासियों के साथ बइन्साफ़ी की जा रही है। कुछ लोग दकियानूसी सोच से गस्त होकर मज़हब और साम्प्रदायिकता के गुलाम बनकर जी रहे हैं। कुछ कट्टरवादी लोग दूसरे समदायों के लोगों को पराये कहकर उनके साथ हत्या-बलात्कार आदि की घिनौना गुनाह करते रहते हैं। कोइ मज़हब के नाम पर राजनीति करते हैं और कानून के साथ खिलवाड़ करके भी दूसरों को किनारा करने की कोशिश करते हैं। कुछ लोग 'धमान्तरण', 'घर-वापसी' और 'बहुसंख्यक- अल्पसंख्यक' वी बतुक नारों को लेकर सत्ता हथियाने का धंधा करते हैं। कुछ लोग 'हिन्दुत्व' आदि की ब-सिर-पर की विचारधाएं गढ़कर भारतीयता का ठेका लिए हुए हैं और संविधान के साथ भारी जुल्म करते हैं। कोइ जीने-बढ़ने के संघष म लगे हैं, तो कोई दूसरों पर अपनी ताकत जमाने की नाजायज़ होड़ म लगे हैं। ज़्यादातर राजनेता पसे या मट्ठी

की ताकत से सत्ता पर कांबिज होकर देश के पहरेदार बने हुए हैं और भष्ट तरीकों से अपनी-अपनी मंजिल पहुँचने मं लगे हैं। कइ धर्म-नेता 'सिर्प मं और मरी' के खुदगर्जी-भरे आदर्श के जाल मं फँसकर अपना निजी स्वग बनाने मं व्यस्त हैं।

एक मशहूर और जबरदस्त शायर हैं, जिनको मं करीब से जानता हूँ। उन्होंने अपनी ज़िन्दगी का हवाला देते हुए अमोर और गरीब का रेखाचित्र खींचा है, जो कि गौरतलब है। उन्हीं के लफ्ज़ों मं, ''सम्पन्नता और विपन्नता तो सचमच भाग्य-रेखाओं का चक्कर ही लगता है। वयोंकि मं स्पष्ट देख रहा हूँ, जिनके पास कुछ नहीं है वे बहुत बड़े बन गये हैं और जिनके पास बहुत कुछ है वे अकिंचन-से बने हैं।'' उच्च वग के लोग ज़्यादा धन-दौलत के कारण बरी तरह से बोमार हो गये हैं, जबकि निम्न वग के लोग अपने पास कुछ नहीं होने या ज़रूरत से कम होने से बतहाशा परेशान हैं। जीने-बढ़ने के जी-तोड़ संघषों की मार-काट प्रतियोगिता तलवार के धार पर चल रही है। मल्य-व्यवस्था हार गयी है, एसा लगता है। धर्म व आचार्यगण मंदिर-मस्ज़िद के ताकत-परीक्षण मं लगे हैं और आम लोग अंधविश्वास की अघाता खाई मं फँसे हुए हैं। प्रशासन बड़ी मात्रा मं गैर-इन्तज़ामो और निष्क्रियता की हालत मं है। देश की असली हकीकत जब गाँवों की जनता से जुड़ी है, नेता-अभिनेता शहरीय धुन पर ही देश को समझने-चलाने पर तुले हैं। बड़े-बढ़े लोग आखिरी साँस तक अपने परिवार, संस्था, समदाय और देश को अपनी मट्ठी मं बाँधे रखकर उसका फ ायदा भोगने की कोशिश मं है और युवा पोढ़ी को साथ लेकर उसे नेतृत्व के गुणों से सक्षम बनाने मं कम दिलचस्पो लेते हैं। एसे उल्टे-पल्टे हालात मं बशुमार सवाल उठते हैं, जिनका जवाब देना भी किसी भी शरीफ़ नागरिक के लिए, एक बड़ी चुनौती से कम नहीं है। वास्तव मं भारत अनोखी खूबियों और अजीब चुनौतियों के बोच झूल रहा है। खूबियों मं निखार आये, इसके लिए चुनौतियों का सामना करना ज़रूरी है। देश को जिम्मदार नागरिकों की कारगर पहलों का इन्तज़ार है।

डॉ. एम. डी. थॉमस
संस्थापक निदेशक, इंस्टिट्यूट ऑफ़ हार्मनि एण्ड पीस स्टडीज़, नयी दिल्ली
प्रथम मंजिल, ए 128, सेक्टर 19, सेक्टर 19, द्वारका, नयी दिल्ली 110075

दूरभाष: 09810535378 (p), 08847925378 (p), 011-45575378 (o)
ईमेल : mdthomas53@gmail.com (p), ihps2014@gmail.com (o)
बेबसाइट: www.mdthomas.in (p), www.ihpsindia.org (o)

Twitter: https://twitter.com/mdthomas53
Facebook: https://www.facebook.com/mdthomas53
Academia.edu: https://independent.academia.edu/MDTHOMAS